हरेक का पोजीशन अलग2 होता है। मनुष्य तो सर्वव्यापी कह देते तो सब एक हो जाता है। उनकी महिमा ही नहीं रही। गाते भी हैं ऊंच ते ऊंच भगवान। तो ऊंच ते ऊंच ठिकर-भितर थोड़े ही कहेंगे। बिलकुल ही कुछ नहीं जानते। जो देखो पूजो उनके आक्युपेशन का पता ही नहीं। कृष्ण का चित्र कितने स्थानों पर रखे हैं। श्रीनाथ पर ~~जैसे~~ जाओ फलाने जगह जाओ है तो एक ही। ~~भक्ति-मार्ग हैं और अंधियारा। ज्ञान है सवेरा।~~ हरेक आत्मा स्टुडन्ट है। अपने ऊपर ही कृपा आद करनी है। मैं करूंगा तो यह ~~बनुंगा~~ बनुंगा। स्टुडन्ट को तो अपनी पढ़ाई पढ़नी है। और कोई बातों से तेलक ही नहीं। सच्चे2 बच्चे जो समझ सयाने हैं ~~जैसे कैसे वैसे~~ ~~सम्मिलित~~ होंगे बाप तो रास्ता बड़ा सिम्पल बताते हैं। बराबर हम सतोप्रधान थे फिर 84 के बाद सतोप्रधान बनना ही है। फिर बाप आकर रास्ता बताते हैं। पद तो बहुत ही ऊंचा है। मेहनत बहुत चाहिए। कैसे भी कर के मैं आत्मा हूं मैं आत्मा हूं यह याद रखना है। नाम-रूप से न्यारा होना है। पार्ट ही पूरा होना है। फिर नये सिरे पार्ट में आवेंगे। इसलिए बाप कहते हैं देहीअभिमानी बनो। तुम बच्चों को अब स्मृति आई है हम ने 84 जन्म लिये हैं। बच्चों को समझ चाहिए। अपने को सुधारने के लिए दैवीगुण गुण भी जरूर धारण करनी है। बाबा ने देखो ल0ना0 का चित्र कमरे लगा दिया है। एआबजेक्ट को देखने से बुधि में याद आवेगा हम यह बनते हैं। बाबायुक्ति बताते हैं। जो करेंगे सो पावेंगे। टीचर के साथ कब किसकी दुश्मनी हो नहीं सकता। उनका काम ही है पढ़ाना। स्टुडन्ट का का भी काम है पढ़ाई में लगना। और कैरेक्टर को भी सुधारना है। इस में बहुत कैरेक्टर सुधर जाना है। अपने को आत्मा समझ भाई2 को देखो। इसमें समझ बड़ी अच्छी चाहिए। जो पढ़ते है उनको घड़ी2 अन्दर में आना चाहिए। दूसरों को भी सिखलाना है। अगर सर्विस नहीं करते हैं तो और ख़यालात में ही बुधि लगी रहेगी। बाप कहते हैं तुमको तात सारा दिन यही लगी रहनी चाहिए। बाप से हम यह वर्सा पाते हैं। विश्व की बादशाही का। ऐसे नहीं सिर्फ चित्र रखो और दैवीगुण कुछ भी नहीं। इससे फायदा ही क्या। यह तो नशा चढ़ना चाहिए। वह चढ़ेगा सर्विस करने वाले को। बाबा जानते हैं इनको नारायणी तो दूर भी नहीं। प्रजा भी पाई जैसे के बने हैं। खुद भी समझ सकते हैं। कोई2 मूर्ख होते हैं जो नहीं समझते हैं। बाबा ने तो ल0ना0 का चित्र रख दिया। वाह बाबा द्वारा यह बनना है। मन-मनाभव हुआ ना। यह एआबजेक्ट है ना। वह खुशी आये कहां से। गायन भी है अति इन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। बाबा कहते हैं अगर उन्नति करनी हो तो इस चित्र के आगे बैठ जाओ। पुरुषार्थ करना है। नाम मात्र सिर्फ नहीं रखना है। वह तो फालतू है। ल0ना0 के चित्र ~~के नीचे~~ अपना भी फोटो रख दो। हम यह बन रहे हैं। जब तक अवस्था पक्की हो यह बच्चों के लिए है। पक्के को तो चित्र की दरकार ही नहीं। खुशी का पारा चढ़ता रहेगा सर्विस एक्युल को। उन में ~~वे~~ दैवी गुण भी होंगे। समझ से काम किया जाता है। हरेक को अपने दिन अन्दर देखना है हमारे में कोई खामी तो नहीं है। बेहद के बाप साथ लव है? सारी दुनिया इस समय मुर्दाबाद है। कब्रस्थान है। हम अभी परिस्थानी बन रहे हैं। बाबा तो बुजुर्ग है ना। कब किसको कुछ भी ख़याल न होगा। बाबा तो बच्चे कह बात करते हैं। हेर पड़ी हुई है। हरेक के वातावरण, चलन, खान-पान, बोलना सब से मालूम पड़ जाता है। बहुत मीठा बनना है। शिव बाबा का यज्ञ है इस पर तो न्योछावर होना है। कितना तरस आना चाहिए। बच्चे बिचारे मुंझे हुये हैं। तुम हो सजे के औलाद सजे। अंधों को रास्ता बताते हो। यह गोला तो बहुत क्लीयर है। ऐसे चक्र कई शास्त्रों में भी दिखाते हैं। बाबा ने देखा है ऐसे चक्र के सिर्फ लकीरें पड़ी रहते हैं औ कुछ भी नहीं। तीन चार लकीर होते हैं। तुम्हारा गोला तो है अर्थ सहित। यह गोला तो बहुत बड़ा बनाना चाहिए। कोई2 चित्र बहुत बड़े2 होते हैं। पत्थर का बूत बहुत बड़ा2 ज़मीन से निकालते हैं। वास्तव में इतने बड़े कोई आदमी होते नहीं। यह तो गोला बहुत ही छोटा है। यह तो बहुत बड़ा 6 फुट का बनाना है। जो बिलकुल क्लीयर देखने में आये। इन में भी क्लीयर है। कब कौन आते हैं, नई दुनिया में कितने मनुष्य होते हैं, फर्स्ट से

ओपे ही देखने से ही उनको ज्ञान आ जाये। इतना बड़ा गोला होना चाहिए 6फुट। दूर से हो [illegible] पढ़ सके। त्रिमूर्ति भी हो। विनाश की भी लिखते हो। डेट भी हो। एकदम बड़ा बनाये कोई दिखावे। दो तीन हज़ार खर्चा होगा हर्जा नहीं है। इन से जितनी सर्विस होगी वह इन पाई-पैसे के चित्रों से नहीं होगी। जितना [illegible] इतनी सर्विस भी होगी। तो जहां2 बड़े सेन्टर्स हैं वहां इतने बड़े चित्र होनी चाहिए। बड़े2 [illegible] स्टेशन का जो मुख्य स्थान है। एकदम ट्रान्सलाईट का भी बनाये सकते हो। जो सभी आकर देखे। [illegible] तुमको समझाने की भी दरकार नहीं। आपेही पढ़ेंगे। तिथ-तारीख़ सब लिखा हुआ हो। त्रिमूर्ति गोला और झाड़। यह हैं मुख्य चित्र। ज्ञान भी बाबा यह ही समझाते हैं। बाकी तो पिक्चर्स बहुत हैं। दूसरा फिर मुख्य है गीता का भगवान कौन? इस बात में सब साधुसन्त आद का बेरा गर्क होना है। कितनी बड़ी भूल है। कहां वह 84 जन्म लेने वाला, कहां वह पुनर्जन्म रहित। बाप के बायोग्राफी में बच्चे का नाम। यह तो कब सुना ही नहीं। इससे ही सिद्ध होता है कितने पत्थर बुद्धि हैं। तुम समझाते हो उस गीता पढ़ने से नर्कवासी बने हैं। इससे स्वर्गवासी बनते हैं। महिमा तो तुम दोनों की करते हो। श्रीकृष्ण है फर्स्ट प्रिन्स। परन्तु पत्थर बुद्धि इन बातों पर भी लड़ने लग पड़ते हैं। जैसे एकदम तवाई। कोई2 बुजुर्ग बच्चे होते हैं तो अच्छा समझाते हैं। छोटे बच्चे को देख खा जाते हैं। यह नहीं समझते हमारे मुरशद बनने वाले हैं। माथा तो झुकाना है। बाकी हिंसा की कोई बात नहीं। ऐसे नहीं कि कुमारियों ने बाण मारा और [illegible] पड़ा। इसमें मज़बूत लड़ाक चाहिए। आगे तो तुमको कहते थे मैदान में नहीं आते हो। अभी तो तुम बड़े मैदान में निकले हो। बाबा की मुरली बम्बई वाले देहली वाले सभी सुनते हैं। जो अपने को महारथी समझते हैं तो ऐसे2 ख़याल करें। कैसे बड़े चित्र बनाये जायें। भल 4 ब टूकड़े में बने हो तो भी हर्जा नहीं। सचार टूकड़ आपस में जोड़ कर लेंगे। अच्छी रीत कोई जांच करे तो सब कुछ मिल सकता है। बड़े सीट भी मिल सकते हैं। विलायत में भी बहुत कुछ मिल सकता है। अच्छा डियुटी पड़ेगी वह भी युक्ति से काम करना पड़े। ऐसी विशाल बुद्धि बच्चों की आने वाली है। बड़े2 सिटस विलायत से मंगावेंगे ट्रान्सलाईट के। बाबा को दर्शन तो चाहिए बड़े2 गांव के लिए। ऐसी जगह लगानी चाहिए जहां से सभी पास करें। रेलवे में बहुत जाते हैं। ऐसे बहुत जगह हैं जगह हैं। जैसे सरकस आती है, बहुत मनुष्य देखते हैं। स्टेशन भी बहुत अच्छा है। कलकत्ते में चौरंगी रोड बहुत अच्छा है। देहली में कनाट पलेस है ऐसे2 स्थानों पर बड़े2 चित्र लगा दो। ईनश्योर भी करा दो। अथवा सिपाही भी खड़ा कर सकते हैं। बहुत ढेर सर्विस होगी। सारी नालेज का यह तन्त है। इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। अब इन बातों में कौन ध्यान देंगे। जगदीश है, ईन्द्र है, मोहनी है, कुमारका आद है उन्हों को माथा मारना पड़े। लिखा-पढ़ी करनी पड़े। पिन्सिल को चला जाना चाहिए। बोलो हमको ऐसी चीज़ चाहिए दुनिया के कल्याण के लिए। विलायत में भी चन्द्रु बच्चा है। इस रूहानी सर्विस से बहुत ही लव चाहिए। निकलेंगे जरूर जो ऐसे2 सर्विस करेंगे। सारा मदार झाड़, त्रिमूर्ति पर ही है। बाबा अभी भी कहते हैं 5-5 हज़ार एक एक चित्र भी लावे कोई हर्जा नहीं।

अच्छा हम आज आर्डर देता हूं 6 चित्र एक एक के बनाओ। खर्चा की तो बात ही नहीं। कोई बनाये दिखावे। बाबा अभी आर्डर देते हैं। इतना बड़ा 6 फुट। झाड़, त्रिमूर्ति, गोला। ट्रान्सलाईट के 6-6 का आर्डर दे दो। अगर नमुना दिखावे तो लाख रुपया एडवान्स दे दो। चन्द्रु बच्चा कुछ कर के दिखावे तो कहें चन्द्रु ने तो कमाल की। बड़े ही फर्स्ट क्लास सर्विस की। अच्छा बड़े2 शीट न हो तो जोड़ कर देंगे। अपने को नालेज से काम है। अभी नज़दीक आते जाते हो। प्रभाव तो निकलेगा ना। बच्चों का। यह होने का है। बम्बई वाले, देहली वाले यह काम कर सकते हैं। कलकत्ते में भी जरूर ट्रान्सलाईट बनाने वाले होंगे। या प्रबन्ध कर देने वाले होंगे। वहां भी दो चार अच्छे बच्चे हैं। सभी बच्चे सुनेंगे। बाबा को समाचार देंगे। तिथ-तारीख भी हो यहां से यहां तक राज्य किया। क्लीयर अक्षर हो। अच्छा बच्चों को गुडनाईट। नमस्ते।